NH Debate – 55

"सबसे बड़ा अक्लमंद और सबसे बड़ा मूर्ख"

सबसे बड़ा अक्लमंद और सबसे बड़ा मूर्ख दोनों हमारे अंदर बसते हैं| यह सिर्फ परवरिश-पारिवारिक व् सामाजिक वातावरण; यानी माँ-बाप अथवा अभिभावकों द्वारा दी गई या उपलब्ध करवाई गई नैतिक शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा, सही धर्म का सही ज्ञान व् पालन, वैचारिक व् व्यवहारिक स्वतंत्रता और बराबरी की छूट पर निर्भर है कि आप कितने अक्लमंद या मूर्ख निकलते हो|

अक्लमंद सिर्फ किसी से ज्यादा चतुर होने भर से नहीं होता है, वरन अक्ल की व्यवहारिकता भी जरूरी होती है| इसका दायरा बोलचाल-व्यवहार-जिम्मेदारी-नैतिकता-वचनबद्धता-चरित्र-उद्देश्य की समझ से भी है|

और मूर्ख होना किसी के कम अकलवान होने भर से नहीं होता है, इसका दायरा दुर्भाषि-दुर्व्यवहारी-चिड़चिड़ापन-गैर-जिम्मेदारानी, भय, कायरता, लालच और धोखधड़ी करने वाला बन जाने तक को इस परिभाषा में घेरता है|

टैलेंट और बौद्धिकता हर कोई एक जैसी ही ले के पैदा होता है, फर्क सिर्फ उसके प्रकार का होता है| माँ-बाप का जीवनभर का अनुभव भी बच्चे में उनका खून बन के दौड़ रहा होता है| और जो माँ-बाप इस बात को समझ के बच्चे को आगे बढ़ाता है उनका बच्चा ज्यादा अकलवान व् सामर्थ्यवान बनता है| दूसरी तरफ जो माँ-बाप बच्चे में उनके खून के योगदान को महत्व ना दे, उसको उम्र के हिसाब से छोटा समझ, बीस साल का होने तक भी छोटा ही मानते हैं और दूसरों जैसा बनने या दूसरों को देख के चलने की परिपाटी पे डालते हैं वो बच्चे कभी खुद को देख के चलना नहीं सीख पाते, फिर वो चाहे बीस तो क्या साठ साल के हो जाएँ|

हमारे शरीर का भी एक एडमिनिस्ट्रेशन सिस्टम होता है; जो इन दो एक दूसरे के विपरीत माहौलों में पड़ के ऊपर परिभाषित अकलवान और मूर्ख दोनों साबित हो सकता है| जो माँ-बाप बच्चे को अपना अनुभव दिखाने और बताने की बजाये, अपने अनुभव से सीख बच्चे को आगे बढ़ाते हैं वो बच्चे जीवन में निसंदेह अलग मुकाम पाते हैं|

शरीर के एडमिनिस्ट्रेशन में सबसे पहली चीज आती है "सोधी" यानी होश, होश यानी आपके तत्व से आपका परिचय, उस पर आपकी पकड़, उस पर आपकी समझ| अगर बच्चे को "सोधी" सही से दिला दी और उससे उसका सही परिचय करवा दिया तो समझो बच्चे के अकलवान बनने का मार्ग प्रसस्त हुआ| इसके बाद बच्चे के लिए सिर्फ इतना बाकी रह जाता है कि अक्ल की राह पर उसका मार्ग कितना लम्बा और मंजिल कितनी बड़ी हो सकती है|

लेकिन अगर बच्चे को उसके तत्व की सोधी से ही नहीं मिलवाया तो वो बच्चा बहुत परेशानी और भटकाव में जीवन व्यतीत करता है| क्योंकि "सोधी" ही वो चीज है जो फिर बच्चे की बॉडी एडमिनिस्ट्रेशन के बाकी विभागों की जिम्मेदारियां व् नियंत्रण तय करती है| जैसे कि दिल को कितनी

आज़ादी चाहिए अथवा देनी है, दिमाग को किधर ज्यादा इस्तेमाल करना है; इच्छाशक्ति कितनी प्रबल बनानी है; आत्मा की सुन के चलना है या समाज को देख के, वासना हितकारी है अथवा अहितकारी, वासना स्व-नियंत्रण बनाने की चीज है अथवा डरने, झिझकने, शर्माने और दबने की| बड़ी गंभीर बात है कि अगर आपको होश ही नहीं, अपने तत्व की जानकारी ही नहीं तो आप इनमे से कोई भी चीज सही नहीं कर पाते हो|

वो माँ-बाप और अभिभावक बहुत ही घातक होते हैं जो अपने बच्चों को एक एक्सपेरिमेंटल लैब की तरह ट्रीट करते हैं| विचारणीय है कि लैब में एक्सपेरिमेंट्स सैम्पल्स पर होते हैं और आपका बच्चा आपके लिए सैम्पल नहीं हो सकता| वो एक रियल लाइफ प्रोडक्ट है जिसको समाज रुपी मार्किट में सफल बनाने हेतु, सिर्फ एक ही बार उतारा जाना होता है|

यहां एक विचारणीय बात यह भी है कि इस विषय का माँ-बाप या परिवार की अमीरी-गरीबी, कागजी शिक्षा स्तर से कोई लेना देना नहीं; क्योंकि ऐसा होता तो एक राजा कभी रंक ना बनता और एक कंगाल कभी मालामाल ना बनता| जिस टहनी पे बैठे उसी को काटने वाला सूरदास कभी कविराज ना बनता और डॉक्टर होते हुए भी डॉक्टर कभी लिंग परीक्षण ना करता|

इसका वास्तविक लेना-देना है तो माँ-बाप की आध्यात्मिकता व् सामाजिक चेतना से; जो आती है समाज में धर्म क्या है, बराबरी और एकता क्या है, आचार-विचार क्या है, पडोसी समाज का व्यवहार क्या है, नए अंदर आने वाले बाहरी समाजों के लोगों की आपसे और आपकी उनसे घुलन-मिलन कैसी है, घुलन-मिलन नहीं बैठती है तो उनसे खुद के समाज को बचाने की लकीरें क्या हैं आदि पैमानों से|

सामाजिक उदाहरण के तौर पर हरियाणवी समाज जहां, एक तरफ समर्थ - साधन सम्पन्न - सामाजिक सहशीलता - दुःख-दर्द को समझने वाला, पालनहार रवैये जैसे सकारात्मक पहलु रखता है, वहीँ इस समाज के अंदर की नकारात्मकता का असर है कि तीन पीढ़ियों बाद भी पाकिस्तान से आये हिन्दू परिवारों का बच्चा (यहां सिख परिवारों का जिक्र नहीं है) शुद्ध रूप से हरियाणा में पैदा होने के बाद भी खुद को हरियाणवी नहीं पंजाबी ही कहता है; एन.सी.आर. में एक-दो-तीन पीढ़ियों से पूर्वोत्तर से आ के बसने वाले आज भी हरियाणवी संस्कृति में सिर्फ बुराई देखने तक ही सिमित हैं| 1947 में पाकिस्तानी पंजाबी हरियाणा आ के बसे उसको मजबूरी मान सकता हूँ, परन्तु 1984-86 में पंजाब से आके हरियाणा में बसना तो चॉइस ही कही जाएगी ना? परन्तु फिर भी इन लोगों के लिए हरियाणवी संस्कृति और सभ्यता के लिए इतना भी लगाव नहीं कि इनके बच्चे खुद को हरियाणवी कहते देखे जाते हों| और यह मैं कोरी कल्पनाओं के आधार पर नहीं अपितु मुँहदेखी अनुभव की बात कह रहा हूँ|

अपनी ज्ञानता झाड़ने को तो कोई लाख बुराई कर ले हरियाणा की, परन्तु अंत सच्चाई यह है कि आखिर में उनको शांतिपूर्वक जीवनयापन की सब सुख-सुविधा पूर्वोत्तर से ले के पंजाब तक में भी घूम आने पर मिलती हरियाणा में ही है|

सो अगर और कोई इस पर ना सोचे परन्तु एक मूल हरियाणवी (इस मूल हरियाणवी की परिभाषा में आज वो भाई भी आते हैं जो बाह्य सभ्यताओं से आते हुए भी शुद्ध रूप से हरियाणा में पैदा होते हैं, अथवा मैं तो कम से कम इतना मानता हूँ| उनसे इतनी अपील है कि वो उनकी सभ्यता की धरोहर को सहेजें, परन्तु उसको सर्वोत्तम बताने हेतु, हरयाणवी को ना कचोटें|) इसपे जरूर सोचे, कि एक हद से

ज्यादा आपकी संस्कृति के हो रहे नकारात्मक प्रचार को नहीं थमवाया गया तो आपके बच्चों की "सोधी" प्रभावित होगी और उनकी हालत "धोबी के कुत्ते वाली" हो के रह जायेगी, वो ना खुद को हरियाणवी कह सकेंगे और ना किसी और संस्कृति का| ऐसे सैम्पल बनके घूमेंगे कि सभ्यताएं भी कन्फुजिया जाएँगी कि यह मेरा है या तेरा|

सच मानियेगा समाज में एक "पंजाबी", "बंगाली", "मद्रासी" वगैरह जाने जाते हैं तो इन सभ्यताओं की अपनी कुछ लिमिट हैं उनकी वजह से परन्तु "हरियाणवी" इसकी तो जैसे कोई लिमिट ही नहीं है, ना ऊपर की ना नीचे की| ऊपर इतनी ह्रदय विशालता है कि कोई भी आ जाए उसी को बसा लेते हैं, परन्तु नीचे इतनी फ़टी पड़ी है कि नेशनल मीडिया हो या स्टेट, हरियाणवी सभ्यता के नाम पे हरियाणवी अपने लिए दो इज्जत के शब्द सुनने और पढ़ने को तरस जाते हैं|

बुरा मत मानियेगा परन्तु बच्चों के मूर्ख और अक्लमंद बनने से इसका सीधा-सीधा लेना देना है और आशा करता हूँ कि कैसे, वो समझ आया होगा|

Author: Phool Malik

Publisher: Nidana Heights

Dated: 28/01/2015